IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा की भूमिका

विक्की सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

ओमकारानन्द इन्सीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट एण्ड टेक्नोलॉजी,

ऋषिकेश।

सारांश–

शिक्षा राष्ट्रीय विकास की आधारशिला होती है। जिस राष्ट्र के नागरिक सुशिक्षित होंगे वह राष्ट्र अपना विकास सुनियोजित रूप से करेगा और जिस राष्ट्र में निरक्षरों क संख्या अधिक होगी वहां राष्ट्रीय विकास भी बाधित होगा। शिक्षा के इसी दृष्टिकोण के आधार पर कोठारी आयोग (1964–66) में राष्ट्र निर्माण विकास में शिक्षा की अपरिहार्य भूमिका का उल्लेख निम्न शब्दों में किया गया है। ''भारत के भाग्य का निर्माण इस समय उसकी कक्षाओं में हो रहा है। हमारा विश्वास है कि यह कोई चमत्कारोत्ति नही है। विज्ञान और शिक्षण विज्ञान पर आधारित इस दुनिया में शिक्षा ही लोगों को खुशहाली, कल्याण और सुरक्षा के स्तर का निर्धारत करती है। हमारे स्कूलों और कॉलेजों से निकलने वाले विद्यार्थियों की योग्यता और संख्या पर ही राष्ट्रीय पुनःनिर्माण के उस महत्त्वपूर्ण कार्य की सफलता निर्भर करेगी।

(मुख्य शब्द– राष्ट्रीय विकास, शिक्षा)

प्रस्तावना

राष्ट्रीय विकास का अर्थ– कोठारी आयोग के उपयुक्त कथन से राष्ट्रीय विकास का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। आज शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रीय विकास है इसी को ध्यान में रखकर कोठारी आयोग के प्रतिवेदन में यह कहा गया है '' राष्ट्रीय विकास के समग्र कार्यक्रम में शिक्षा की भूमिका का हम फिर से मूल्यांकन करें।'' समग्र कार्यक्रम के लिए शिक्षा के निम्नलिखित लक्ष्य रखे गए है–

1. शिक्षा द्वारा सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देकर चरित्र निर्माण करने का प्रयत्न करना।
2. शिक्षा द्वारा सामाजिक और राष्ट्रीय एकीकरण करना।
3. शिक्षा द्वारा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान करना।

इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा राष्ट्रीय विकास की आधारशिला है। जॉन वी0जे0 ने राष्ट्रीय विकास का अर्थ इस प्रकार बताया है। ''राष्ट्रीय विकास समस्त नागरिकों का सम्मिलित प्रयास है और इसके अतिरिक्त शक्ति, ज्ञान, कौशल तथा समान्त मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों का विकास है।''

संयुक्त राष्ट्र संघ की दशक रिपोर्ट में विकास का अर्थ इस प्रकार बताया है। ''विकास का अर्थ है वृद्धि एवं परिवर्तन। यह परिवर्तन सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक होता है।''

सारांशतः राष्ट्रीय विकास का अर्थ आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं राजनीतिक विकास है। आज आधुनिकीकरण, औद्योगिकरीकरण, सामाजिक परिवर्तन आदि राष्ट्रीय विकास का आधार माने जा रहे है।

यह सब तभी सम्भव हो सकते है जब राष्ट्रीय विकास के अनुकूल शिक्षा व्यवस्था का पुनःनिर्माण किया जाये।

राष्ट्रीय विकास की बाधाएं– भारत में राष्ट्रीय विकास की मुख्य बाधाएं है– अशिक्षा, निम्न बचत, स्थिर अर्थव्यवस्था, अविकसित प्राकृतिक सम्पदा, अर्थ का अभाव, निर्यात पर निर्भरता, जनसंख्या की अधिकता एवं बेरोजगारी आदि है। जिनके कारण राष्ट्रीय विकास पर्याप्त गति से नही हो पा रहा है। उद्योगो का अर्थव्यवस्था में योगदान जिन देशों में अधिक होता है वे विकसित देशों की कोटि में आते है। भारत की जनसंख्या प्रतिवर्ष बेतहाशा बढ़ रही है। 2007 तक कुल जनसंख्या 1,02,70,15,247 के आंकड़े का पार कर चुकी है।

इसके उपरान्त भी भारत में मानवीय पूंजी व भौतिक पूंजी की कमी है। भौतिक पूंजी के कारण श्रमिक शक्ति का पूर्ण उपयोग नही हो पा रहा है। मानवीय पूंजी अशिक्षा, कुपोषण, बेरोजगारी और निर्धनता से ग्रसित है। आज आवश्यकता अत्याधुनिक तकनीकी, कौशलों को प्राप्त करने की है जो व्यवसायिक शिक्षा द्वारा लाई जा सकती है।

भारत में कुछ सामाजिक प्रथाएं, परम्पराएं आदि वर्षों से चली आ रही है, जो आज के विकास के अनुरूप नही है। संयुक्त परिवार प्रथा, धार्मिक संकीर्णताएं, दहेज प्रथा, बाल विवाह जैसे सांस्कृतिक, सामाजिक परम्पराएं संकुचित दृष्टिकोणों का विकास करती है जिससे तीव्र विकास की प्रक्रिया में बाधा पहुंचती है। बढ़ती हुई जनसंख्या भी इसी का परिणाम है। अतः यदि राष्ट्रीय विकास को त्वरित करना है तो लोगों के व्यवहारों व मूल्यों में परिवर्तन लाना पड़ेगा। आर्थिक विकास की गति भी भारत में मन्दी है। आज भारत में प्रति व्यक्ति औसत आय अन्य देशों की तुलना में बहुत कम है। अधिकांश लोग गरीबी रेखा से न्यूनतम रेखा से न्यूनतम स्तर पर जीवन यापन कर रहे है।

राष्ट्रीय विकास में शिक्षा की भूमिका– किसी भी देश का विकास (राष्ट्रीय विकास) उस देश के आर्थिक विकास पर निर्भर करता है। एडम स्मिथ ने अपनी कृति 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' में शिक्षा और आर्थिक विकास के सम्बन्ध में सर्वप्रथम बताया। आपने कहा ''शिक्षा के द्वारा मनुष्य की उपयोगी क्षमताएं एक स्थाई पूंजी का रूप ले लेती है।'' एडम स्मिथ ने शिक्षा को कार्यशील पूंजी माना है। क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति को बुद्विमत्ता और अच्छी आदतें सिखाती है।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री मार्शल शिक्षा को अधिकतम मूल्यवान पूंजी मानते है। अतः शिक्षा की नीतियों का नियमन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि वह राष्ट्र का हित कर सके। मार्शल का कहना है कि होनहार और योग्यतम छात्रों की योग्यताओं की अनदेखी करना राष्ट्र के हित के विरूद्ध है।

नीति नियमन की दृष्टि से विचार करें तो भारत की नीति अनुचित है। आज भी भारत में शिक्षा 62% तक ही पहुंच पाई है। आवश्यकता है कि प्रत्येक भारतीय साक्षरता मिशन में अपनी भागीदारी निभाएं। बांग्लादेश और श्रीलंका इस ओर अग्रसर है। शिक्षित निर्धन अशिक्षित अमीर की तुलना में अधिक विश्वासपूर्ण व संकलपित होता है। नोबेल पुरस्कार से अलंकृत अर्थशास्त्री अमर्त्यसेन इस बात को कह चुके है–चीन जैसा देश साक्षरता से शिक्षा की ओर जा रहा है। जबकि भारत इसमें पिछड़ रहा है। शिक्षा और आर्थिक विकास एक–दूसरे को प्रभावित करते है। कोई भी राष्ट्र अपना सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास बिना शिक्षा के नही कर सकता।

भारत में औद्योगीकरण का अभाव है और आर्थिक विकास के लिए औद्योगीकरण आवश्यक है। इन सबसे भी बढ़कर तथा यह है कि शिक्षा पर जितनी मात्रा में व्यय किया जा रहा है उसका प्रतिफल नही मिल पा रहा है। स्वतन्त्रता के 50 वर्ष से अधिक समय छोड़ने वालों की संख्या आज भी बढ़ रही है। उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त व्यक्ति बेरोजगार है और इस रूप में शिक्षा में किया गया निवेश अनुपयुक्त प्रतीत हो रहा है। जबकि शिक्षा को आज विनियोग माना जा रहा

है। हारबिन्सन और मायर्स ने अपनी कृति ''शिक्षा मानव शक्ति एवं आर्थिक विकास'' में अनौपचारिक शिक्षा पर विशेष बल दिया है। संक्षेप में शिक्षा की निहितार्थ यह है कि यह व्यक्ति को नवीन परिस्थितियों से जूझना सिखाती है और नई परिस्थिति से सामना करके व्यक्ति कुछ त्वरित करने के लिए शिक्षा की सर्वाधिक मूल्यवान पूंजी है। शिक्षा प्राप्त व्यक्ति सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक बाधाओं से अपनी बौद्धिक क्षमता द्वारा निपट लेता है। यद्यपि पूर्ण रूप से यह नही कहा जा सकता है कि केवल शिक्षा ही आर्थिक एवं राष्ट्रीय विकास का माध्यम है। जब तक प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार नहीं मिलेगा, मानव शक्ति का सही नियोजन नहीं किया जाएगा तब तक शिक्षा पर किया गया व्यय व्यर्थ ही जायेगा।